संत कबीर

कक्षा-9

प्रस्तुतकर्त्रीः
डॉ लाजो कपूर

मध्यकाल के समाज का चित्र

ब्राह्मण को छूने के कारण दंडित किया जा रहा अछूत

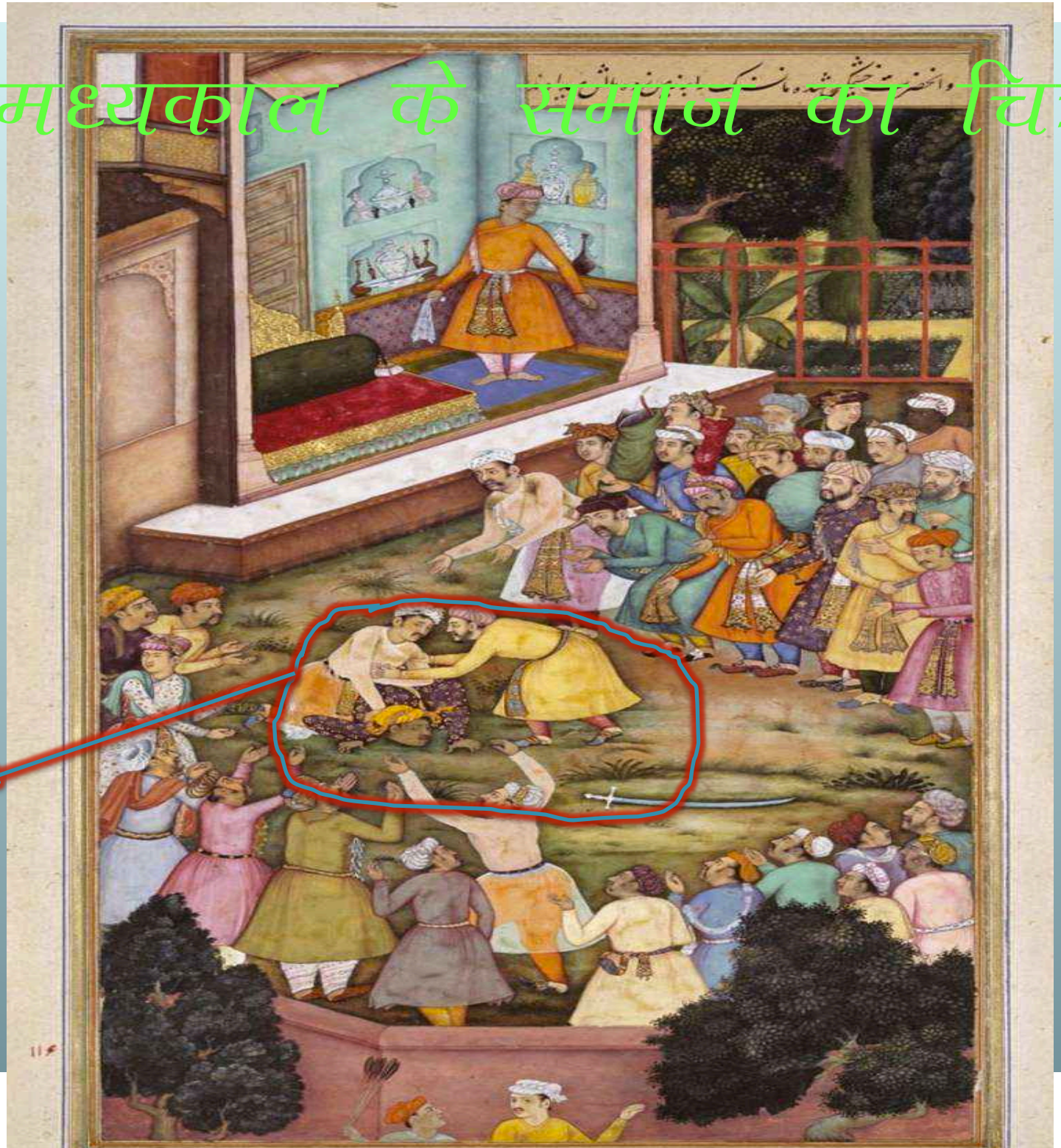

कबीर का समय राजनैतिक एवं धार्मिक अराजकता का था ?

- **सिकंदर लोदी का शासन**
- **अन्यायपूर्ण वातावरण**

- धर्म के नाम पर संघर्ष
- धर्म उपशाखाओं में विभक्त
- जातिगत भेदभाव

फी संत
र्गुणभक्ति

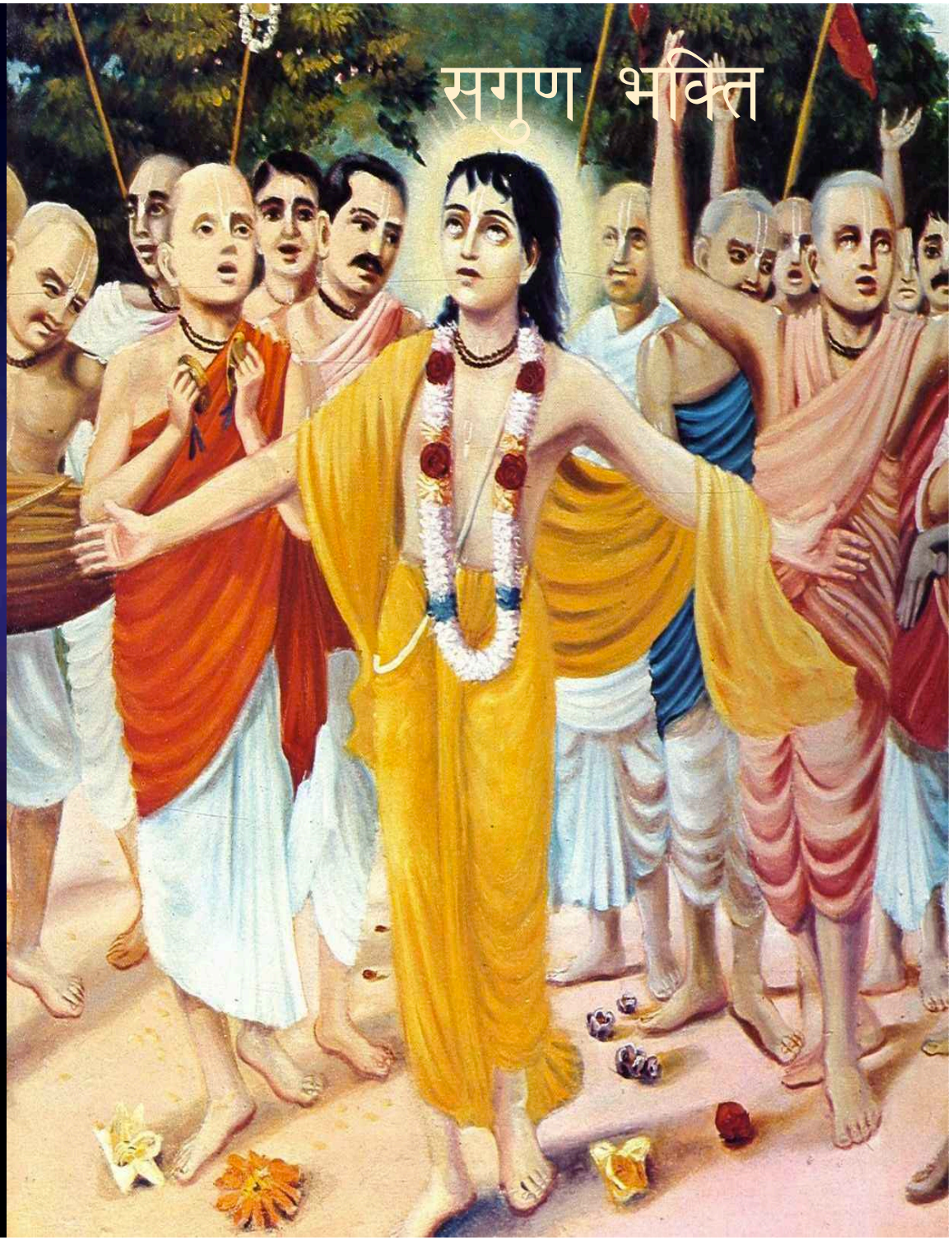

© Anuradha Goyal

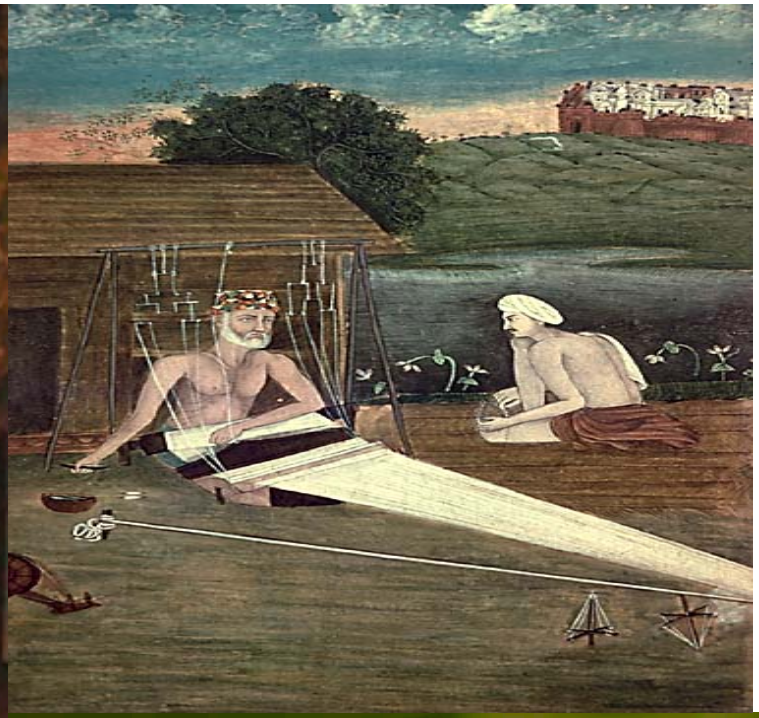

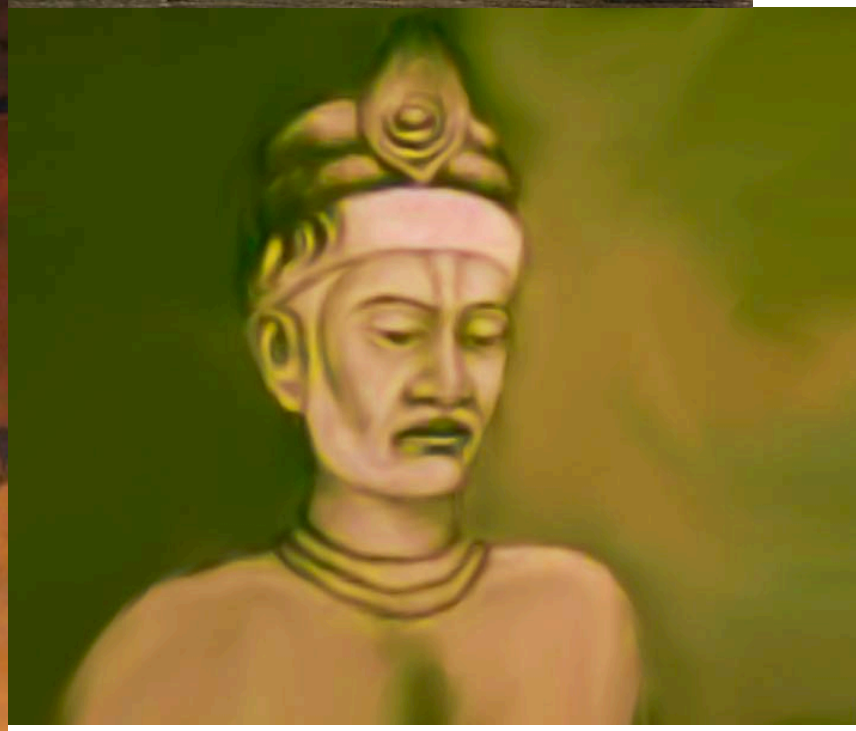

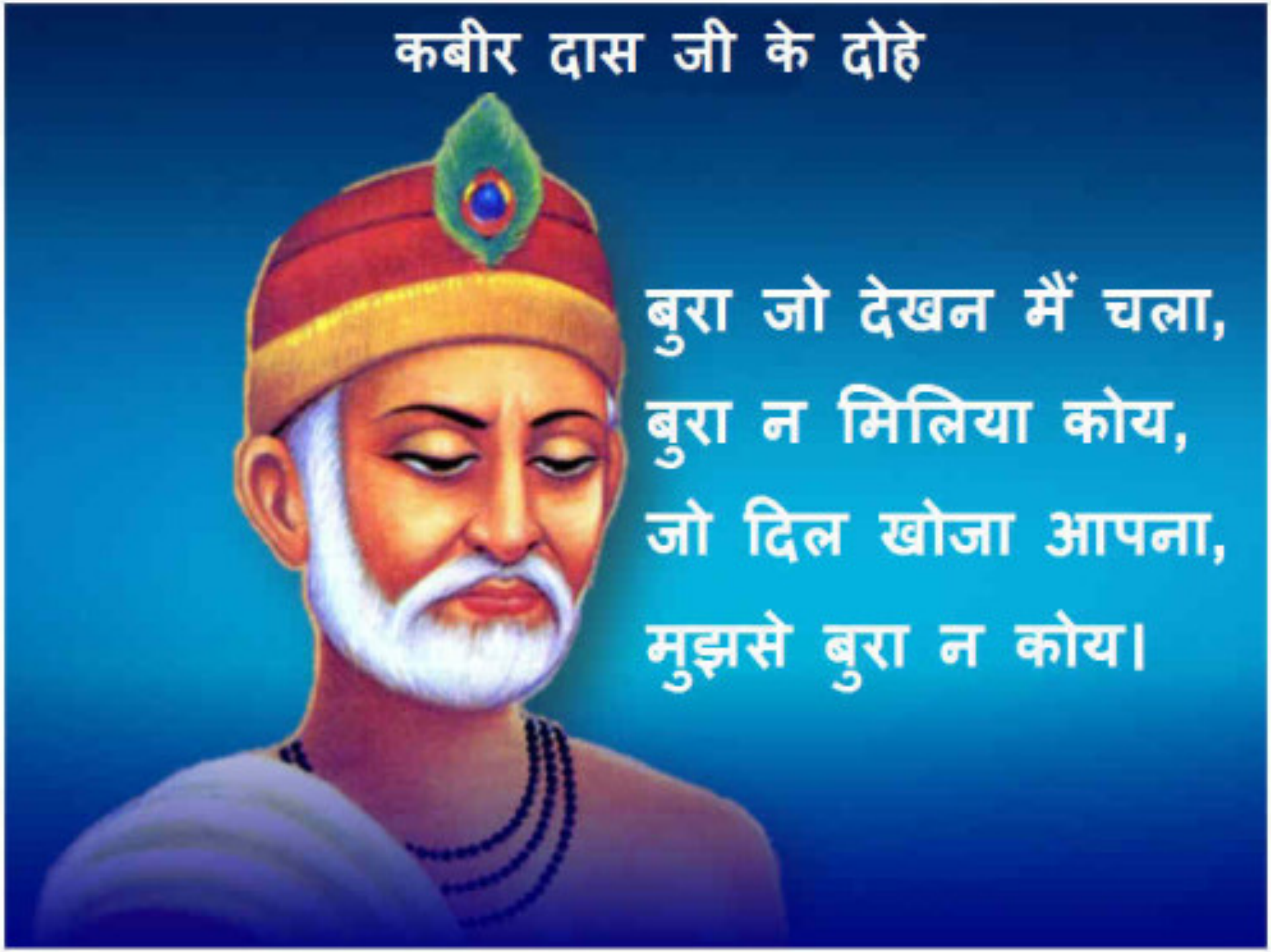

कबीर दास जी के दोहे
बुरा जो देखन मैं चला,
बुरा न मिलिया कोय,
जो दिल खोजा आपना,
मुझसे बुरा न कोय।

ध्यान से पढ़ें

मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।।

हिंदू मूआ राम कहि, मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीवता, जो दुहुँ के निकटि न जाइ।

कबीर के काव्य के मूल में कौन सी सीख छिपी है ?

समाज सुधारक कबीर

- धार्मिक संकीर्णता का विरोध
- जातिगत भेदभाव का विरोध
- बाह्याडम्बर एवं अंधविश्वास का विरोध

धन्यवाद